National Journal of Multidisciplinary Research and Development
www.newresearchjournal.com
ISSN: 2455-9040
Received: 10-12-2025, Accepted: 09-01-2026, Published: 24-01-2026
Volume 11, Issue 1, 2026, Page No. 40-44

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि का अध्ययन

डॉ० संजीव कुमार तिवारी[1], राकेश कुमार यादव[2]

[1] प्राध्यापक–शिक्षाशास्त्र, लाइफ लॉन्ग लर्निंग विभाग, शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

[2] शोध छात्र–शिक्षाशास्त्र, लाइफ लॉन्ग लर्निंग विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा, मध्य प्रदेश, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध अध्ययन का उद्देश्य सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है। इस अध्ययन में यह समझने का प्रयास किया गया है कि विद्यालय का प्रकार, पारिवारिक सामाजिक–आर्थिक पृष्ठभूमि, शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता, शिक्षक मार्गदर्शन तथा सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश विद्यार्थियों की विषयगत अभिरुचि को किस प्रकार प्रभावित करते हैं। शोध निष्कर्षों से संकेत मिलता है कि सरकारी विद्यालयों के वंचित वर्ग के विद्यार्थियों में कृषि विषय के प्रति अपेक्षाकृत अधिक अभिरुचि पाई गई, जो उनके ग्रामीण परिवेश एवं पारिवारिक व्यवसाय से जुड़ाव को दर्शाती है, जबकि गैर–सरकारी विद्यालयों में वाणिज्य एवं फाइन आर्ट के प्रति विद्यार्थियों की रुचि अधिक देखी गई, जिसका कारण बेहतर संसाधन, करियर–उन्मुख शिक्षा एवं रचनात्मक अवसरों की उपलब्धता मानी जा सकती है। अध्ययन यह भी स्पष्ट करता है कि उचित मार्गदर्शन, विषय चयन में परामर्श तथा समान शैक्षिक अवसर प्रदान किए जाने पर वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की अभिरुचि में सकारात्मक परिवर्तन संभव है। यह शोध शैक्षिक नियोजन, पाठ्यक्रम विकास तथा वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए विषय चयन एवं व्यावसायिक मार्गदर्शन को अधिक प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

मूल शब्दः सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय, वंचित वर्ग, विद्यार्थी, कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट, मध्यमान, शैक्षिक अभिरूचि, मानक विचलन, क्रांतिक अनुपात इत्यादि

प्रस्तावना

प्रस्तुत शोध अध्ययन सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि के अध्ययन पर केन्द्रित है। माध्यमिक शिक्षा का स्तर विद्यार्थियों के भविष्य के शैक्षिक एवं व्यावसायिक मार्ग को निर्धारित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए यह चरण और भी अधिक निर्णायक होता है, क्योंकि सामाजिक–आर्थिक सीमाएँ, पारिवारिक पृष्ठभूमि, संसाधनों की उपलब्धता तथा विद्यालयीय वातावरण उनकी रुचियों और आकांक्षाओं को गहराई से प्रभावित करते हैं। कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट जैसे विषय न केवल रोजगारपरक एवं कौशल–आधारित हैं, बल्कि ये विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, उद्यमशीलता और आत्मनिर्भरता को भी प्रोत्साहित करते हैं।

सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों की शैक्षिक संरचना, शिक्षण संसाधन, विषय चयन की स्वतंत्रता तथा मार्गदर्शन की व्यवस्था में पर्याप्त भिन्नता देखने को मिलती है, जिसका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि पर पड़ना स्वाभाविक है। विशेष रूप से वंचित वर्ग के विद्यार्थियों में विषय चयन अक्सर रुचि के बजाय उपलब्धता, सामाजिक अपेक्षाओं या आर्थिक दबावों से प्रभावित होता है। ऐसे में यह आवश्यक हो जाता है कि उनकी कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट के प्रति वास्तविक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए, जिससे यह स्पष्ट हो सके कि विद्यालय का प्रकार किस प्रकार उनके रुझान को आकार देता है।

अतः यह शोध अध्ययन वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि को समझने, सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के बीच विद्यमान अंतर को उजागर करने तथा नीति–निर्माताओं, शिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों को विषय चयन एवं शैक्षिक मार्गदर्शन से संबंधित प्रभावी निर्णय लेने में सहायक सिद्ध होगा।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

प्रस्तुत शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व इस तथ्य से स्पष्ट होती है कि वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल साक्षरता तक सीमित न रहकर विद्यार्थियों की रुचि, क्षमता एवं भविष्य उन्मुखी कौशल के विकास से जुड़ गया है। वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को प्रायः सीमित संसाधनों, सामाजिक–आर्थिक बाधाओं तथा मार्गदर्शन के अभाव का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उनकी वास्तविक शैक्षिक अभिरुचियाँ प्रायः पहचान में नहीं आ पातीं। सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत ऐसे विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट जैसे विविध विषय क्षेत्रों के प्रति अभिरुचि का अध्ययन करना इसलिए आवश्यक है ताकि उनकी स्वाभाविक रुचियों एवं संभावनाओं को समझा जा सके। यह शोध अध्ययन शिक्षा योजनाकारों, नीति निर्माताओं एवं विद्यालय प्रशासकों को पाठ्यक्रम निर्माण, विषय चयन, व्यावसायिक मार्गदर्शन तथा संसाधनों के न्यायसंगत वितरण में वैज्ञानिक आधार प्रदान करेगा। साथ ही, यह अध्ययन वंचित वर्ग के विद्यार्थियों को उनकी रुचि के अनुरूप शिक्षा एवं आजीविका के अवसर उपलब्ध कराने में सहायक होगा, जिससे शैक्षिक असमानता को कम करने, ड्रॉप–आउट दर घटाने तथा समावेशी एवं समान अवसर आधारित शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा।

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान–कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध–प्रबन्धों एवं अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण, अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने एवं कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है।

किसी भी विषय के विकास में किसी विशेष शोध प्रारूप का स्थान बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्व सिद्धान्तों एवं शोधों से भली–भाँति अवगत होना चाहिए। इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यवहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सैद्धान्तिक एवं शोधित साहित्य की समीक्षा करनी होती है।

सम्बंधित साहित्य

त्रिपाठी, रवीन्द्रनाथ (2010) ने "उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिरूचि, अभिवृत्ति तथा उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व के कारकों के प्रभाव का अध्ययन" नामक शीर्षक पर अध्ययन किया। इस अध्ययन के लिए निर्मित किये गये प्रमुख उद्देश्यों में विद्यार्थियों के अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं उपलब्धि स्तर का अध्ययन करना तथा उनके अभिरूचि, अभिवृत्ति एवं उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व के कारकों के प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन के लिए कुल 800 विद्यार्थियों का चयन यादृच्छिकी विधि से किया गया। इस अध्ययन में उन्होंने पाया कि माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के अभिरूचि पर व्यवितत्व के कारकों का प्रभाव सार्थक है तथा इसी प्रकार विद्यार्थियों के अभिवृत्ति पर भी व्यक्तित्व के कारकों का प्रभाव सार्थक पाया गया। जबकि विद्यार्थियों के उपलब्धि स्तर पर व्यक्तित्व के कारकों का प्रभाव नगण्य पाया गया व दोनों में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

साव, अजय कुमार (2010) ने हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी के प्रभाव का अध्ययन किया। उद्देश्य– पारम्परिक व्याख्यान विधि एवं कम्प्यूटर की सहायता से अध्यापन करने से विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि पर पडने वाले प्रभाव का तुलनात्मक अध्ययन करना। शोध विधि– प्रयोगात्मक शोध विधि का प्रयोग किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन में उपकरण–(1) शैक्षिक उपलब्धि पूर्व परीक्षण (2) शैक्षिक उपलब्धि पश्चात परीक्षण (3) शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण (स्वनिर्मित)। निष्कर्ष– छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि में परस्पर धनात्मक सहसंबंध पाया गया। अल्प समय में छात्रों की अभिरूचि में कोई बड़ा परिवर्तन हो पाना सम्भव नहीं है। छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन किया जायें तो कम्प्यूटर सहायतित शिक्षण विधि, पारम्परिक शिक्षण विधि की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है। अतः हाई स्कूल के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि व शैक्षिक अभिरूचि के सन्दर्भ में सूचना व सम्प्रेषण तकनीकी का अधिक प्रभाव पडता है।

साहू, सुखदेव राम (2010) ने "अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि का अध्ययन" किया। उद्देश्य– हल्बा एवं मूरिया जनजाति के विद्यार्थियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति ज्ञात करना तथा उनकी शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि का पता लगाना। शोध विधि– प्रस्तुत शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। उपकरण– सामाजिक–आर्थिक स्तर मापनी स्वनिर्मित परीक्षण। शैक्षिक रूचि परीक्षण– आर. एल. भारद्वाज। शैक्षिक उपलब्धि परीक्षण– एस.पी. कुलश्रेष्ठ। निष्कर्ष–हल्का एवं मूरिया जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एवं शैक्षिक रूचि में सार्थक अन्तर है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य इस प्रकार है–

सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की परिकल्पनाएं

प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाएं निम्नवत हैं–

1. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
2. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।
3. सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध में विवरणात्मक अनुसन्धान की सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या

प्रस्तुत शोध में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद के सरकारी व गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में चुना गया है।

न्यादर्श

शोध में शोधकर्ता ने सम्भाव्य विधि के अंतर्गत आने वाले सरल यादृच्छिक न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया है। इसके अंतर्गत उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ जनपद के दो विकासखंड कुण्डा व लालगंज अझारा में स्थित क्रमशः 5–5 सरकारी व 5–5 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा 10 में अध्ययनरत वंचित वर्ग के 400 विद्यार्थियों (200 छात्र तथा 200 छात्राओं) का चयन किया गया है।

शोध उपकरण

डॉ० एस० पी कुलश्रेष्ठ द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत शैक्षिक अभिरुचि मापनी का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत मापनी डॉ० एस० पी कुलश्रेष्ठ (शिक्षा विभाग), डी०ए०वी० कॉलेज देहरादून (1978) द्वारा निर्मित की गयी है।

शोध से प्राप्त परिणामों का सारणीबद्ध व उनकी व्याख्या अग्रवत है

परिकल्पना 1: सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका 1: कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता (0.05 स्तर पर)
सरकारी	200	8.13	1.80	398	3.65	सार्थक अंतर है
गैर सरकारी	200	8.82	2.00			

तालिका संख्या 1 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के छात्र–छात्राओं की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण करने पर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 8.13 और मानक विचलन 1.

80 है, एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 8.82 और मानक विचलन 2.00 है। इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 3.65 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। अर्थात् शोधकर्ता की इस शून्य परिकल्पना को सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत किया जाता है।

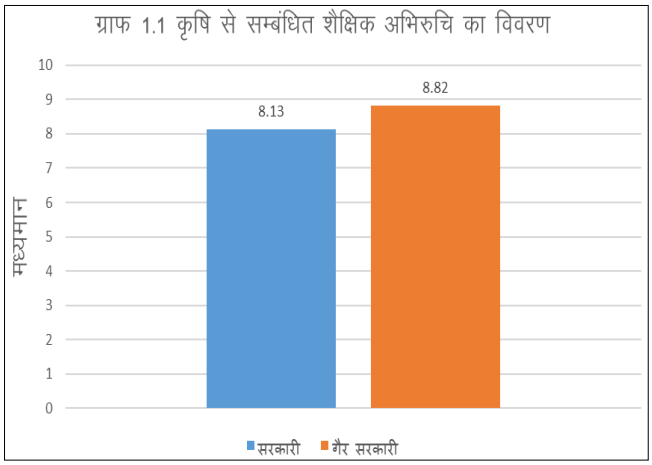

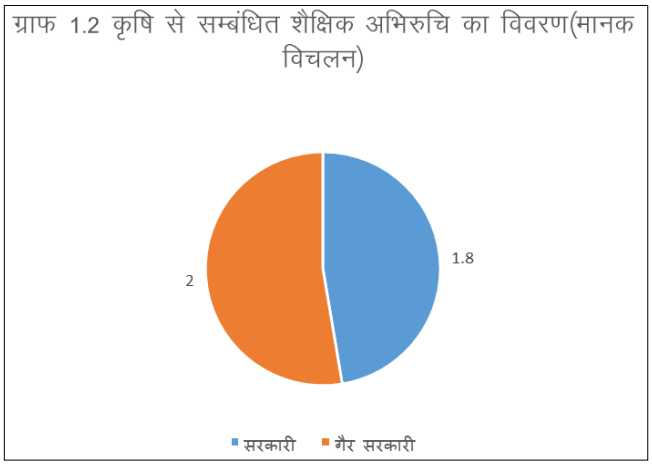

परिकल्पना 2: सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका 2: वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता (0.05 स्तर पर)
सरकारी	200	8.42	1.82	398	0.68	सार्थक अंतर नहीं है
गैर सरकारी	200	8.54	1.51			

तालिका संख्या 2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण करने पर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 8.42 और मानक विचलन 1. 82 है, एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 8.54 और मानक विचलन 1.51 है। इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 0.68 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से कम है।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अर्थात् शोधकर्ता की इस शून्य परिकल्पना को सार्थकता स्तर 0.05 पर स्वीकृत किया जाता है।

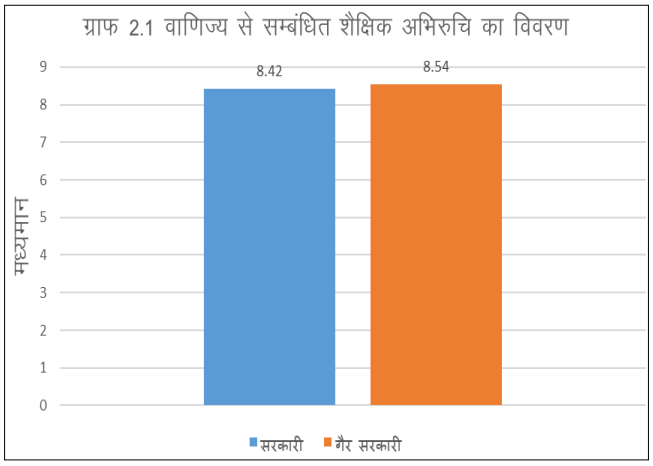

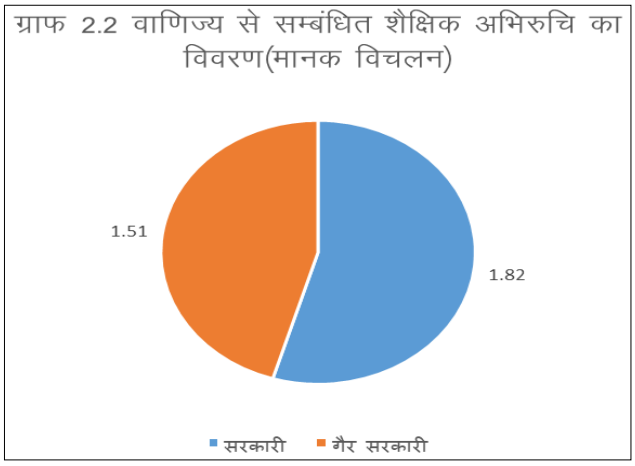

परिकल्पना 3: सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में कोई सार्थक अन्तर नही है।

तालिका 3: फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का विवरण

विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्रता मान	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता (0.05 स्तर पर)
सरकारी	200	8.30	1.80	398	6.19	सार्थक अंतर है
गैर सरकारी	200	7.15	1.91			

तालिका संख्या 3 के अवलोकन से स्पष्ट है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि परीक्षण करने पर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 8.30 और मानक विचलन 1.80 है, एवं गैर सरकारी विद्यार्थियों के प्राप्तांको का मध्यमान 7.15 और मानक विचलन 1.91 है। इन दोनों मध्यमानों में सार्थक अंतर ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात की गणना की गयी जिसका मान 6.19 है, जो सार्थकता स्तर 0.05 के सारणी मान 1.96 से अधिक है।

अतः निष्कर्ष रूप में कह सकते है कि सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरूचि में सार्थक अन्तर है। अर्थात् शोधकर्ता की इस शून्य परिकल्पना को सार्थकता स्तर 0.05 पर अस्वीकृत किया जाता है।

ग्राफ 3.1 फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का विवरण

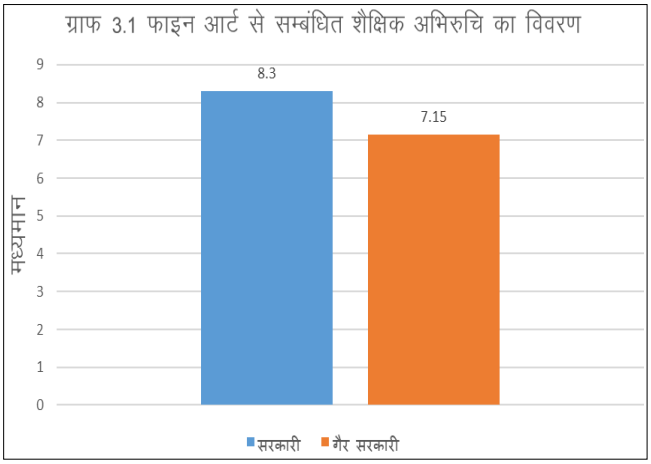

ग्राफ 3.2 फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का विवरण

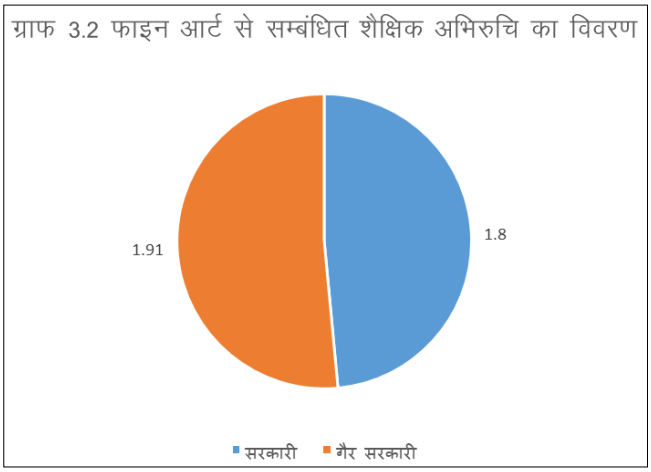

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन में "सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है" से सम्बंधित परिकल्पना का परीक्षण किया गया। प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि विषयक शैक्षिक अभिरुचि में वास्तव में सार्थक अन्तर विद्यमान है। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट होता है कि विद्यालय के प्रकार, उपलब्ध संसाधन, शिक्षण वातावरण, व्यावहारिक अनुभवों की उपलब्धता तथा मार्गदर्शन की गुणवत्ता जैसे कारक विद्यार्थियों की कृषि संबंधी रुचि को प्रभावित करते हैं। अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि उक्त परिकल्पना स्वीकार की जाती है और सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि में महत्वपूर्ण एवं अर्थपूर्ण अन्तर पाया गया।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में सरकारी एवं गैर–सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण के आधार पर यह पाया गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय के प्रति शैक्षिक अभिरुचि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। प्राप्त परिणामों के अनुसार निर्धारित शून्य परिकल्पना स्वीकार की जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि विद्यालय के प्रकार (सरकारी एवं गैर–सरकारी) का वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की वाणिज्य विषय में रुचि पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ता तथा उनकी शैक्षिक अभिरुचि लगभग समान स्तर की पाई गई।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में "सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि में सार्थक अन्तर है" से सम्बंधित परिकल्पना के परीक्षण के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला गया कि दोनों प्रकार के विद्यालयों के वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट के प्रति शैक्षिक अभिरुचि में सांख्यिकीय रूप से सार्थक अन्तर पाया गया। अध्ययन के परिणामों से स्पष्ट होता है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में फाइन आर्ट के प्रति अभिरुचि अपेक्षाकृत अधिक पाई गई, जबकि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की अभिरुचि तुलनात्मक रूप से कम रही। इसका प्रमुख कारण गैर सरकारी विद्यालयों में उपलब्ध बेहतर शैक्षिक संसाधन, प्रशिक्षित कला शिक्षक, सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों को अधिक प्रोत्साहन तथा अनुकूल शैक्षिक वातावरण हो सकता है। वहीं सरकारी विद्यालयों में संसाधनों की सीमित उपलब्धता, कला विषयों को अपेक्षित महत्व न मिलना तथा अवसरों की कमी वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित अभिरुचि को प्रभावित करती है। अतः यह कहा जा सकता है कि प्रस्तुत परिकल्पना स्वीकृत होती है तथा दोनों प्रकार के विद्यालयों में वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की फाइन आर्ट से सम्बंधित शैक्षिक अभिरुचि में वास्तविक एवं सार्थक अन्तर विद्यमान है।

शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध अध्ययन की शैक्षिक उपयोगिता अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की कृषि, वाणिज्य एवं फाइन आर्ट से संबंधित शैक्षिक अभिरुचियों को स्पष्ट रूप से समझने में सहायक है। इस अध्ययन के निष्कर्षों के आधार पर पाठ्यक्रम नियोजकों, शिक्षकों एवं शैक्षिक प्रशासकों को यह ज्ञात हो सकेगा कि विभिन्न शैक्षिक धाराओं के प्रति वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की रुचि किस स्तर तक है, जिससे उनकी अभिरुचि एवं क्षमता के अनुरूप विषय चयन, शिक्षण विधियों तथा सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों का प्रभावी नियोजन किया जा सके। साथ ही यह अध्ययन व्यावसायिक एवं कौशल आधारित शिक्षा को प्रोत्साहित करने, रोजगारोन्मुखी विषयों के विस्तार तथा ड्रॉपआउट दर में कमी लाने में सहायक सिद्ध हो सकता है। इसके अतिरिक्त, यह शोध शैक्षिक समानता एवं अवसरों की उपलब्धता सुनिश्चित करने हेतु नीतिनिर्माताओं को उपयुक्त शैक्षिक योजनाएँ एवं सुधारात्मक कदम उठाने के लिए दिशा प्रदान करेगा, जिससे वंचित वर्ग के विद्यार्थियों के समग्र शैक्षिक विकास में सकारात्मक योगदान दिया जा सकेगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. राय, पारस नाथ (2008): अनुसंधान परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल प्रकाशन, आगरा।
2. सिंह, अरूण कुमार (2017): मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, पटना।

3. शर्मा, एन. (2017): कृषि शिक्षा का सामाजिक एवं शैक्षिक महत्व, रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर।
4. शुक्ला, आर. (2018): शैक्षिक अभिरुचि एवं विद्यार्थी विकास, एपीएच पब्लिशिंग कॉर्पोरेशन, नई दिल्ली।
5. पांडेय, के. (2019): फाइन आर्ट शिक्षा और रचनात्मक विकास, चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
6. कुमार, एस., एवं वर्मा, पी. (2019): माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की विषयगत अभिरुचि का अध्ययन, न्यू रॉयल बुक कंपनी, लखनऊ।
7. मिश्रा, डी. (2020): वंचित वर्ग के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याएँ एवं संभावनाएँ। भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका, 15(2), 45–52।
8. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (2021): माध्यमिक शिक्षा में पाठ्यचर्या एवं विद्यार्थी अभिरुचि, एनसीईआरटी, नई दिल्ली।
9. सिंह, ए. (2021). माध्यमिक विद्यालयों में वाणिज्य शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिरुचि। शैक्षिक अध्ययन एवं अनुसंधान, 18(1), 67–74।
10. यादव, एम. (2022): सरकारी एवं गैर–सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिरुचि का तुलनात्मक अध्ययन। समकालीन शिक्षा विमर्श, 10(3), 89–96।